

राह / मावासा / कि

एव / डाका

थसा

रू रू

गान

मरुत / यारु कलधि / नाम मेमधि / यरुमधि / वयमधि

कमलध

मवि



ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॐ नमो श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ गुरुपवनक्राविधान ॥ ऊ धाम  
जगितायाः थापनावृद्धात् ॥ हृद्योऽयम् ॥ यद्गवर्धस्वधन ॥ पूजास्वदिशपय  
क ॥ गुरुमधुनः दधुनि त्रिसमाधिः ॥ नापलं धृष्टाव ॥ कलसुयुजाः कलन्या  
गा ॥ मधुन विद्यामन ॥ ॐ नमो रं हेतुं है ॥ गीखलं खनहय ॥ ॐ वज्रय कहं ॥  
ॐ मदिनीवजीरववज्रवधं है ॥ कलवन्धयाय ॥ नीवाजनः मगद गान्ध्या ॥

अर्कपलपाद्याः देव्यान्नास ॥ मत्वा ॥ ॐ मदिनीवज्रि विमहापगिस्तन  
क २ है रूद्राहा ॥ वृद्धस ॥ ॐ अमृतवन्धवत् २ पवनविशुद्धं रूद्राहा ॥  
मदिनीस ॥ ॐ अमृतविलाकिनी गह्वरं न कनी ॥ आकर्षणीयं रूद्राहा ॥  
पद्मिमत ॥ ॐ विमलविपुलजयवत् अमृतविनजं रूद्राहा ॥ ॐ रुद्रस ॥  
ॐ रुद्र २ संरुद्र २ रूद्रिवत् विलाकिनीय रूद्राहा ॥ ॐ कालियत्वाहा ॥



ॐ कलातीय स्वाहा ॥ ॐ कं कालीय स्वाहा ॥ ॐ यं यन्त्राय स्वाहा ॥ यश्च यज्ञान  
यज्ञा सु वि ॥ ॐ यन्मित्रं नमस्तु सर्वसम्यग्निदायनी ज्ञातुं कुर्वन्वशात्  
सर्वसंस्वात्मकायना ॥ ॐ कृष्णकुर्वन्महाद्याना कायश्चिमलिषनी इदं निरुत्तरी ह  
नी काधेवजी नमाम्यहं ॥ ॐ महाह्वानाहवाद्यीहमवर्धुपुत्रकरी । मासूनी  
यनमस्तुर्विद्यानास्त्री नमाम्यहं ॐ सावृवका विष्णोलाकी विक्रयाम्हा

ॐ हानिवापन्ननागपुत्राद्वीनमस्तु गगनामनी ॥ ॐ वैश्वर्याशुक  
निर्गतामदनास्तु कविगुमा । कात्यादन्दुदनीहनीनमा निदिवावृषि  
नी ॥ ॐ ॥ ॐ श्रीवृत्तनवगुहज्जुमिस्तु ॥ ॐ श्रीकर्मलयाद्यादिपुत्रा  
न्यास ॥ ॐ मया क्राय स्वाहा ॥ ॐ गी गगव स्वाहा ॥ ॐ नका गकनाना  
य स्वाहा ॥ ॐ वृक्षाय स्वाहा ॥ ॐ रामप्रसादाय स्वाहा ॥ ॐ असुनाह







पहात्रयूजासु नि ॥ नमो नानास्वरूपाय नमो नमो नमो नमो निरुद्धादि  
स्वरूपाय नानास्वरूपे नमो नमो ॥ ० ॥ धनलोकाय नमो ॥ धान्या  
दियूषा नमो ॥ ॐ हृन्दाय सुत्राधियनय स्वाहा ॥ ॐ यमाय पुत्राधियनय  
स्वाहा ॥ ॐ वरुणाय नागाधियनय स्वाहा ॥ ॐ कृवाय यक्षाधियनय  
स्वाहा ॥ ॐ अग्नये गजाधियनय स्वाहा ॥ ॐ नैऋत्ये वाकसाधियनय स्वाहा

हा ॥ ॐ वायुवेयवनाधियनय स्वाहा ॥ ॐ इन्द्राय नारुकाधियनय स्वाहा ॥  
ॐ वज्रालाकाधियनय स्वाहा ॥ ॐ ब्रह्माय नकुलाधियनय स्वाहा ॥ ॐ सूर्या  
यग्राधियनय स्वाहा ॥ ॐ पृथिवीलाकमानुषास्वाहा ॥ ॐ आसविजाय अ  
सुराधियनय स्वाहा ॥ ॐ नागाय उलाधियनय स्वाहा ॥ पश्चिमपहात्रयूजा  
सुनि ॥ ॐ हृन्दाय मरुता विनालोकात्मामहद्विकायनादि कृष्टिनावी



नैलाकयालनमास्य हं ॥ नद नू दानर्ल कायु विस्तान ॥ जाय स्वानन ॥ नद  
नू जानक अ विस्तानयाय ॥ नन गुरु खडाव ॥ धन दाव वषूनीयू जायाय ॥  
धनिव नाह नन कायक सलि वाकून ॥ ज जमानक ननक ॥ यडास्तुति ॥  
धन विधान र्थय कनकासक अर्ययाय ॥ ज जमानक जानक न निमकु  
नगा थायनय ॥ अग्रम सरल जत्म सरल जीविन यम समय २ द वान

रुविशाहनसंगाय अवेवहिरु विष्णामिवा वि विरुनयनसा नथग  
भाकलात्य हिममादिस्तानसंगय अग्रम दिव सह यज हूम विद नरु  
प्रसन्नियागा र्व दय सर्ववर्द्ध निमनुयाम्य हं ॥ ० ॥ धूय ॥ कर्पूर  
जजमान स्यान्क पाय अग कनु गुरु मलुले ॥ धनयति सवाया अर्य ॥  
हव ॥ अग्रादि ॥ जजमान स सर्व विष्णाय गान्क र्य सव्य विदवमाव



न गुरुभक्त्याय नृत्पुत्ररक्षणं कुरु नमः सदा नमः आर्य मदाय निस्र  
दविरुद्धात्र कायश्च नमः कामलाय अर्थपुनिक स्वाहा ॥ उं म विधनी व डि  
नीमहाशय निस्रत्र २ क ईरुद्र स्वाहा ॥ ॐ न चन्दन ॐ न ज्ञायवी  
न ॐ न पूषा पुनिक स्वाहा ॥ पयसामृतं गु गु निपुनी स्वाहा ॥  
कयत्र धूप निमनूयामा ह्रीं ॥ ॐ पुनिस्रत्र नमः सुखी सर्वसि  
॥ ॐ न नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥

नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः नमः ॥ १ ॥  
थन साहस्यमदनीया अर्थनीत् ॥ अयादि ॥ उं जी धासन काना  
यशोमगुणीमीमहा साहस्यमदनीया दवीरुद्धात्र काय अर्थपुनिक  
स्वाहा ॥ उं अमृतवत्रवत्र २ सवन विष्णु ईरुद्र स्वाहा ॥ कृष्णवन्द  
नी नमः ॥ कृष्णवन्दनीयवीनक कृष्णपूषा नमः ॥ गु गु नृधूप निमनू



याम्यहं ॥ पञ्चमृगलुगुनियुनिकुखाहा ॥ भूमांनजगद्यदितव  
उविद्रुददिवानिर्ग्याग्याम्यहं ॥ सुनि ॥ कृषुवर्गुमहाध्याना  
काधमाहीमरीषणी ॥ इदंनरुनसहनीकाधवर्जिनमाम्यहं ॥  
१ ॥ धनमहामायत्रीयाज्यर्घ्येष्वनाग ॥ अत्रादि ॥ उंजीकासनका  
नायशीमगुमीशीमहामायत्रीदवीरुहानकायज्यर्घ्येष्वुखाहा ॥ उंजु

मृगविलाविनीगरं सनरुणीकाधवर्णीहं १ रुखाहा ॥ पीनलग्न  
त्रायन्दननम ॥ पीनलग्नरायवीनकपूर्यनम ॥ श्रीवासधूर्वनिम  
नयाम्यहं ॥ पञ्चमृगलुगुनियुनिकुखाहा ॥ भूमांनजगद्यदित  
नरुनविद्रुददिवानिर्ग्याग्याम्यहं ॥ सुनि ॥ महाध्याना  
इवाकवीसमवर्गुपुखाकत्री ॥ मायत्रीवनमामुखविद्यानाहीनम



महं ॥ ३ ॥ धनमन्ता नूसा निशीया ऊर्ध्वमानि ॥ अयादि ॥  
॥ उँजीया सगका नाय श्रीम गृणी श्रीम हाम नूसा निशीय वीरुदा  
नकाय ऊर्ध्वपतीकुखाहा ॥ उँ अमृग विला किनी गरुसं वरुनी वि  
पूत विनज हंरु दूखाहा ॥ नकवन्दननम ॥ नकज हापवी नकनक  
पूष्यपुतिदूखाहा ॥ कमुत्री धूर्पनिमनया मय हं ॥ यय अमृग उगु  
॥ ममान्ता नव निगुमं वकिना निर्यातया मय हं ॥

ति यगीकुखाहा ॥ मुनि उँ या नूवका वि शा ला की विकवा म्हा नू  
हानिय ॥ पुद्गना गयखा देवीनमस्तु गगमाकनी ॥ ४ ॥  
धनगवतीया मत्र ॥ अयादि ॥ ५ ॥ उँजीया सगका नाय श्रीम गृणी श्री  
महाणी गवती देवी रुदा नकाय ऊर्ध्वपतीकुखाहा ॥ उँ हन २ सीहन २  
हृन्दवत्र विला किनीय हंरु दूखाहा ॥ हनिनयन्दननम हनिनजहा



पवीनकपूरनम ॥ गीतधूपनम नुयाम्यहं ॥ यत्रमृगसुखनिपजी  
कृत्वाहा ॥ धूम्रानजगर्घटिनविश्ववज्रविह्वलकीर्णसंवेदायाम्यहं ॥  
मुक्तिर्ध्वंवेष्ट्यशुकनिर्वाहा मदनोत्सुकविजया कारवायकुंदनिह  
नीनमामिदिव्यवृषिनी ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ धनश्रीदिलया ॥ यत्र  
नाम ॥ अथ ॥ ॐ नमोऽस्मिन्दिवायकाश्याययूगाय अंगसंगरसरिता

य अत्रनसंहिताय कर्कशगनपद्मनागवंधूककूस्मसहनाय ध्वज  
नाविदवताय अदिलयाय नकूपयनकूगन्धनकूजशुपवीनपियाय  
कुर्वगत्रयमात्रुदाय दवदानवकुञ्जकिनीसंहिताय अत्रनत्र २ रम  
वन्नानूषावर्गहिगार्थाय अस्मिन्गुरुमगुरुमल्लयानूयविगमध्वदम  
द्वनपूषधूपदियापहारवलिचयुनिगृहता नमोऽस्मिन्दिवायकाश्याययूगाय अंगसंगरसरिता







अर्चयति कृष्ण ॥ (अथ सुवन्दनं नमः) (अथ सुज ह्यपवी ग क पूषानमः ॥  
॥ कर्पूत्र धूप निमक्तु यामिह ॥ दधिघृण दन रुक्म मूय टोषया मरुहं ॥  
मृमन्त्रिण नमः मि न सरवद किना वृ हिया ग स्यु टोखयाम्यहं ॥ मुनि पुं हं ॥  
वाहन संस्तान गीर्गां नु माल विग्रहं ॥ कन्द उरगा न सी कल्प निष्ठा कर्तनमा  
महं ॥ यन अंगवया ॥ अर्चयन् ॥ (इति नमो अंगनाय अमृगारुक्ल

धवनाय महादेव पूजय धनवी सुनाय (इमं कु क सं द लिनाय च क वा  
सुत्र क पूषा न कृज ह्यवि नयियाय क्का ग समा नूयय वज धृ क कुल देवना  
य दय दान व कृ ह्यु जा किनी सहि नाय ॥ अ व ग ल २ ह ग व न्न नूषा नाहि  
नार्थिय ॥ अस्मिन् गुरु म ह्यु ल म (अथ अ नूय विष्णुं हं द म न्न ग न्ध पूषा धू  
वदि धाय दा न व लिख्य नि गृ ह्ना य स्य क्रिय न न स्या सी नी क त्रा ह ग व न्



मनियुष्टिनका कुरुमिसनाय अर्धयनीकृताहा ॥ ई नकागिक मात्राय सा  
हा ॥ नकवन्दननम नकाजहायवीनकवृष्टनम ॥ गुगुनूयनिम  
नयासाह ॥ माषगुगुहकनउयडाषयान्महा ॥ मत्सुमाससनायानय  
क ॥ नका अूनहान् सवषयवीरियाणदिसयडाषयान्महा ॥ कुनि ॥  
विनवा सुनमहागड ॥ लादिनागसुष्टाहिन ॥ गकिरुक्तमहाकाय

अूननायनमासुम ॥ १ ॥ धनवृषया ॥ अर्धवेइय ॥ ई नका  
वृषाय ॥ उवादिमखाय विमुष्टुनवाधिदवनाय ॥ नक्तकूलदवनाय  
सामसुम ॥ गहिनीनकनाय ॥ वृषायवीनगन्धवीनयुषवीनजसु  
पवीनदिनाययडासनाय ॥ अवनन १ ॥ गवन्मनूष्यानीहिनाथीय  
अुत्तिनगुहमदलम ॥ अूनयविष्ठा ॥ दमकनगन्धपूषधूपदीथा



पुनः वलि अमुनि गृह्णन् नमो मुने यथा क्रियते न सायी निकत्रा रगवन्  
गानि पूषि त्रक्रा क्रुद्रु पाय जूय्युनी कृत्वा हा ॥ उ वृषाय स्वाहा ॥  
पीतलगा शचन्द्रन नमः पीतलगा शचन्द्रन कपूर्व नमः ॥ गन्धनस धूपनि  
मनुयाम्यहं ॥ मृदुमाषक सत्ररुक्रमपटाषयाम्यहं ॥ शुभास्व  
र्गुसर्वयती हि पाजादि संपुटाषयाम्यहं ॥ मुनि उ वृषाय सामय

शायपी गवर्गु सुलगादिन पदि उजि गानि सर्ववृषद वनमाम्यहं ॥  
८ ॥ धनवृहस्य निया अर्धपूषा गान ॥ उ नमावृहस्य गय  
वृक्ष विदवताय शुद्रुदवताय वलकूलदवताय अंगनस गाय  
चतुर्वदय दव गुत्र्या धाय पीतगासपीन पूषा पीतलगा शचन्द्रन  
पीयाय अक्षरुदवताय दवदानक रानुज किनी सहिताय



अवगन्तुं गन्तव्यं नृणां हि तार्थय ॥ अस्मिन् गृहमधुलमधय  
नृपविष्णुर्गदमरुतपूष्यधूपदिपापहान्यनिगृह्णन् नमो मुने  
यस्य कीयन्त स्यात्पीनिकनारुगवन ॥ नानिपूषिन्काकूजजमान  
स्य आयुः कामार्थं शागास्यदाय अर्घ्यं नीक्षसाहा ॥ उं शागास्यदाय  
साहा ॥ पीनलग्ननाचन्दनं नम ॥ पीनजहापवीनकपर्षी नम ॥

युवसधूपीनिमक्त्याम्यहं ॥ दधादनकीनरुक्मूपटाषयाम्य  
हं ॥ र्गमहवर्षियववृदिपात्रादि संयुटाषयाम्यहं ॥ मुनि ॥  
उं जामूनदसूतर्गुणरूपीनवासानुलेपनं ॥ दधानीगुर्ववर्ष ॥ शुद्धं वृ  
हस्यगिनमास्तु ॥ ७ ॥ धनशुक्रया ॥ अर्घ्यं दन ॥  
उं नमो गुकाय रागीवदवनाय ॥ वदन्तानाय ॥ अर्घ्यं नाभिदवना











(K)

भातंग नरुमागविष्यदधिनामाषत्रीहिपाशादि संप्रदोषय  
महं॥ सुनि॥ निब कावमहाचन्द्रनीवदहाचसुप्ररः साड  
पान्पमाख्यात निनिम्बननमभुते॥ १॥ धननाह्यातरेव  
नः नावह॥ केननाहवे कोलाग्निदेवताय अर्धोत्प  
लाकृवाय सिंहसुतायः अमृतपिपाय॥ सुलिम्बनः

















यामाह ॥ धनवृद्ध्या ॥ ॐ नमो यथा सामयुगाय नारिनी नरुगाय  
 वज्रसंश्रयदवगाय ॥ उजमानस्य वृक्षगुहात्यन्तपीजयगन्तव्यार्थ  
 आयुस्कार्थं ॥ सुवर्णदक्षिणापीनसर्वपत्नीहिपात्रादिसंयुक्तधन्याम्य  
 ह ॥ धनवृद्धस्यगिया ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगय वरुवृद्धाय ॥ द्रव  
 लुन्या धन्या ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगिरुहात्यपीजयगन्तव्यार्थ  
 आयुस्कार्थं ॥ ब्रह्मासर्ववर्णदक्षिणायवती हिपात्रादिसंयुक्तधन्याम्यह ॥

धनवृद्ध्या ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगिरुहात्यपीजयगन्तव्यार्थ  
 आयुस्कार्थं ॥ ब्रह्मासर्ववर्णदक्षिणायवती हिपात्रादिसंयुक्तधन्याम्यह ॥  
 धनवृद्धस्यगिया ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगय वरुवृद्धाय ॥ द्रव  
 लुन्या धन्या ॥ ॐ नमो वृद्धस्यगिरुहात्यपीजयगन्तव्यार्थ  
 आयुस्कार्थं ॥ ब्रह्मासर्ववर्णदक्षिणायवती हिपात्रादिसंयुक्तधन्याम्यह ॥



नूमाववीरिपाणदिसंयथादयाम्भदं ॥ धनमाह्वया ॥ उंनमात्रादव  
अमृतपियाय सिंहरुगाय कृतिगोश्वरदवगाय उडमानस्यमाह्वय  
हात्यनपीअयुष्मन्त्यर्थ आयुस्कामार्थं वृमंखगदक्षिनाकालमाववी  
हियाणदिसंयथादयाम्भदं ॥ धनकंदुया ॥ उंनमाकगदकाग  
सुगाय स्वर्गियागहसाय उडमानस्यकंदुगुहात्यनपीअयुष्मन्त्यर्थ  
आयुस्कामार्थं वृमंखगदक्षिनाकालमाववी

याणदिसंयथादयाम्भदं ॥ धनकंदुया ॥ उंनमाजस्यदमाये उ  
डमानस्यजस्यगुहात्यनपीअयुष्मन्त्यर्थ आयुस्कामार्थं वृमंख  
जगदक्षिनाकालमाववी वीहियाणदिसंयथादयाम्भदं ॥ १० ॥  
॥ धनकंदुया ॥ धनकंदुया ॥ धनकंदुया ॥ धनकंदुया ॥  
॥ धनकंदुया ॥ धनकंदुया ॥ धनकंदुया ॥ धनकंदुया ॥



कनक \ विसर्जन \ नवाजन \ नवद्वारा \ सुखान \ नवाव  
 जातक द्वाय \ सदन नृत्य \ वज्र नृका विय ॥ धन खान नान  
 या ० समाक \ गुत्रयुजा \ दक्षिना \ नृणाव वियक \ दृष्टी  
 समय \ रुमायन \ लकाविय \ आ गी वी द सुखान \ अरिषक ॥  
 आकृष \ समय ॥ माहिकाव लिच्छा \ नाह मरुतम गान सखाय  
 गृहवलि \ नवगृहपी ० सखाय ॥ यनयति द्वाय ॥ वज्रययक नृकाय  
 वज्राप्रानन नृपाय वरु वि विविदि वात्र द्वा चक्र वनो पी को मालि कर्त्तिका मातापिव  
 निम नृम यी देह नृम यमानाः वाताहि वादयति पटुन नृपत हा नृम यमानात (ध  
 श्री चामुका जा प ल म्मा ह नृम यमानाः मातावा वल लम्मु ॥ १ ॥

॥ यय नृका वलि दृष्टी वलि थान द्वाय ॥ सुखावलि ॥ द्वा न नृका  
 नाय ॥ १० नृका वलि विधान समाक पा ॥ १० ॥ ॥  
 १० नृमा वलि काथे ॥ वज्रा वलि द्वा वी वि वृद्ध गत्व विरुद नि वृद्ध ग  
 विनयापि वृद्ध गय नाय वी ॥ १० सुयं कृ विमान ल्क ॥ सीमा नृपी विनामदे  
 पृक्त कज यमालय ॥ वल दावय पा नि ना ॥ विनयुमान नादवी ॥ विनामी  
 विनवा सुना ॥ विनाय हाव र्मि द्वा ॥ विनमन्त नृनृय नि ॥ उद्भव ल म्मा



वस्तु ॥ यथागच्छवाहिनी ॥ पूर्वपी ० स्तिगानिर्णय ॥ चक्रगानिर्णय ॥  
महेश्वरीमहामाया ॥ महामाया नृलीङ्गनि ॥ महावृषरुमावृष ॥ महा  
हंकावनादनि ॥ हिमसूक्तिनिर्णय ॥ कथावृक्षगणेश्वरी ॥ शिवावनि  
शिखरव ॥ अक्षसूक्तकमलवृ ॥ नासाकात्रलसवादि ॥ दक्षिणनव  
नयदा ॥ शृङ्गिस्तिगिनिनासाथ ॥ सर्वव्यापिसूक्तवरी ॥ लवणपूषावना  
दवी ॥ लवणगि ॥ लवणवाहना ॥ लवणवधुपिनिधाना ॥ मूकालवधुपि

गा ॥ वात्रानस्यीमहाकृत् ॥ गानावृक्षानिर्णय ॥ उरुनाया स्तिगानिर्णय ॥  
महेश्वरीनमामुक्त ॥ ॥ वालरागमहापीदि ॥ कामावित्रकथावनि ॥  
नक्षत्रमयविधाना ॥ सिधुनात्रुलविग्रहा ॥ यदुद्रुजाशिखराव ॥ सिद्धि  
पाणधरागुरु ॥ कुमारयत्रमदव ॥ मयूनायविर्णय ॥ नक्षत्रवधु  
सूक्तगणी ॥ नक्षत्राविरुपिगा ॥ कोव्यायमहाकृत् ॥ वदुद्रुनिवा  
सिनि ॥ अक्षयविस्तिगानिर्णय ॥ कोमावीर्यनमामुक्त ॥ ॥ वीर्यविरि



पुमायायं देवद्वन्द्वनिदानुदा हविगसामनक्रीणी गन्तुं पत्रिस  
संस्तिनं गन्तव्यं गणहस्ता वरुदाहविहविता नकुकावामहा  
कीजा नानावत्तविरुषिगा हविगयुष्ठाठान्धय सदाहविगय  
यीजि सुभूमसुययागाव किमिन्त्येनसंस्तिना अरुहासम  
हाकुरु कन्दववृकवासिनि निष्टकिचिनेकस्य नानास्य  
दीनमामुक्त ॥ गन्ताहीयावन्पीव नकुकाजिमहादवि उद्वय

नात्रगर्हीव गन्ताकृत्रकवायनि कपावमात्रावत्ता विविगय  
षाणाहिता महामहीधमानुदा कविताग्निसमयरा मीनाकु  
नकुकि कादरुहा हावावत्ताकविता विनेय कविनदेह उद्वय  
यविनासनं नकाविकमहाकुरु वृमवृकसमाजिना याम्यपी०  
किमानिरी कालवृपिनमामुक्त ॥ गन्तव्यवीसहसाक्री ककुमान  
सविगुहा सुनग्वीमहादवि सर्वाकालरुषिधी उद्वय







नदिल्लदिसम्यक् ॥ रुक्मवर्गमालया किन्या ॥ यनिवा नाथ नाकूसा ॥  
दविकोटमहाकूज ॥ उड्डव नसमा सिनी ॥ वायुपी ० स्किगानिही ॥  
जाम्बुजयेनमानम ॥ महालक्ष्मीमहादधी ॥ श्रीराम्येठुगहृदयी  
वेगुर्ध्यापायूकात्रया ॥ सिंहासनसूरसिंहा ॥ यगुर्ज्जाविमालाकी  
गरवयुक्तगङ्गाधुना ॥ भायनाहावकयूना ॥ यलककुलधविगी  
नम्रस्ययित्तसर्वागी ॥ दूगेमछिविरुविता ॥ विविगपूष्यजनी

च ॥ वसुगर्गपान्त्रयिनि ॥ मेला कुवायिनीदवि ॥ सर्वस्वा  
सचलाचर ॥ सिद्धिगन्धर्वनमिता ॥ विशाधनसूना सिता ॥ च वि  
जयमहाकूज ॥ वनवृकनिवासिनि ॥ श्ठीगानपी ० संस्कारनमा  
हालक्ष्मीनमामुग ॥ अष्टकृष्णसिंहादवि ॥ अष्टवृक्षानीवासि  
नी ॥ अष्टहस्तवसंयुक्त ॥ अष्टमारुन्नमामुग ॥ जननी सर्वव्या  
ना ॥ सर्वसत्वापकाविही ॥ सर्वदाषटनादवि ॥ संसापकूडनी







दायिमा \ सर्वादिनखमजय \ कृता विप्रसंनिहा \ ब्रह्म पि ० स्तिना  
निर्य \ अष्टकृत्तनिवासिनी \ अष्टमूर्तिस्तिनायवी \ अष्टकृत्ताभि  
द्विस्तिना \ रुद्र पि ० स्तिना निर्य \ रुद्र काली समास्तना \ रुद्र कान  
वकलाव \ वील रुद्रनमामुन \ अग्निनागनृत्तव \ चन्द्रो थकाव  
रुद्रव \ उत्तमं कयालशीषर्ष \ सहानशीषर्षनथ \ सदान अष्ट  
कृत्तवाष्टनमामुन ॥ ~~सर्वस्वनामस्तिनायवी~~ \ सर्वस्वपीठ विप्रको ॥

सर्वकार्यप्रवरुन \ दिवान्न विप्रमिसा \ दगदिक्कृत्तपाल्य  
कृत्तवचरुद्रग \ पंचाग कृत्तपाल्य \ कृत्तपाल्यनमामुन ॥  
~~नाथनाथमहानाथ~~ \ आदिनार्थमहात्मना \ श्रीनार्थसिद्धिनाथ  
क \ मीननार्थनमामुन ॥ कृत्तनाथचपीथव \ दीपनार्थमहात्मना  
युगनार्थकृत्तव \ वरुकनार्थनमामुन ॥ ~~तिनाथनवनाथव~~  
षादगनार्थनमामुन ॥ सखाविग निद्रिपंचाग \ श्रीनागीतिनमामुन ॥



सर्वविनाथसिद्धान्तं । रीतानां त्रिकलाकुलं । शांतासुखं तथा वीर्यं ॥  
 कृतसर्वविनाशमालुन ॥ उक्ता कान्तिका लोचनं । यत्पठेन्निरासकं ॥  
 पथित्वा सर्वभङ्गिनं । पाप्मानं हि क्षियमूर्ध्वं ॥ नासत्यं नृणां कवि-  
 नानं । नागयद्विद्युदवगा । नागयत्कुरुवाग । नागयद्वरुण-  
 इव । नागयत्तु वदो विदुः । नागयद्विष्णुमूर्ध्वं । नागयदग्नि-  
 वादि । नागयत्सर्वविद्युतं ॥ नागयत्सर्वविषं धात्रं । नागयद-

रियात्रुतं ॥ नागयत्सर्वकालं । नागयत्सर्वयुगं ॥ उक्तं  
 पाठ्यमेव यत् । धनधान्यविवर्धनं । धर्माधकाममाश्रयं । यत्पठेत्त-  
 राग्यमूर्ध्वं । अद्विष्टिद्विष्टलक्ष्मीयं । विद्यानास्त्रं सूनं चिन्तनं । पाप्मा-  
 नं निजिवसत्ययं । यत्पठेत्तु रागं व ॥ ५० ॥ निजिद्विष्टलक्ष्मीयं ॥  
 क ॥ ॥

धर्मसु

(५)

५०  
 ५१  
 ५२  
 ५३  
 ५४  
 ५५  
 ५६  
 ५७  
 ५८  
 ५९  
 ६०  
 ६१  
 ६२  
 ६३  
 ६४  
 ६५  
 ६६  
 ६७  
 ६८  
 ६९  
 ७०  
 ७१  
 ७२  
 ७३  
 ७४  
 ७५  
 ७६  
 ७७  
 ७८  
 ७९  
 ८०  
 ८१  
 ८२  
 ८३  
 ८४  
 ८५  
 ८६  
 ८७  
 ८८  
 ८९  
 ९०  
 ९१  
 ९२  
 ९३  
 ९४  
 ९५  
 ९६  
 ९७  
 ९८  
 ९९  
 १००



१ आकाशाय नमः ॥ चतुर्विधं कर्म ॥ यत्कर्म  
सुखं ददाति ॥ दत्तं वा ज्ञेयं सत्त्वं ॥ तत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
गुणैः सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
दत्तं वा ज्ञेयं सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥

नाका ॥ सुन्दर्यासत्त्वं ॥ मत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
कर्म सत्त्वं ॥ कर्म सत्त्वं ॥ कर्म सत्त्वं ॥ कर्म सत्त्वं ॥  
रुना विवहाव ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
विन ॥ विवहाव ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥  
यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥ यत्तु कर्म सत्त्वं ॥



वैश्वानरं वायुं किं नागनाकहावनाथमात्रं पथिग्व  
मखमन्दत्रयोऽथ कर्मया वाणरिव कर्मवनाथमात्रं ॥  
नानावनाथ ॥ योजनाय ॥ ॥

२ सिधा गज २ सिधा गज २ जहा ॥ सी वना वष वसनी  
नाना वंता जनाथी व क ०० स ज व क यि स ख वै  
द्व व स य क ०० न ग्रा वा म या जा ग्य व ज आ गी नी सा  
हा धा त र न कि मी या न र ता ॥ ७ सि त व थ त क ल

७ रु रु रु सा हा धा त र मा त व य श ता ॥ ७ सि ध ता  
ज रु रु रु रु सा हा धा त र ॥ १२

२ ज द ता क य ० ॥ ७ ज द ता वा ता क ल वी र्व  
व स ता न त र ल ॥ क रु ग्य ॥ रु त य व द न ॥ दा  
वा दि य ॥ रु म्पा स्या वा सु कि अ त ल ॥ रु मा त



सं

सिद्धा

विक

गन्ध

नक्रयन्द

किल्ल

नानिष्ठा

लीखन्द

लक

कनवस

नक्रयन्द

अक्रि

वाकस

नक्रयन्द

अक्रि

स्वाय

नक्रयन्द

अक्रि

रुमस

नक्रयन्द

अक्रि

हन्त

नक्रयन्द

अक्रि

मान

नक्रयन्द

अक्रि

मान

नक्रयन्द

अक्रि

एच्यस

नक्रयन्द

अक्रि

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द

नक्रयन्द